संस्कार

मानव जीवन को उच्च, सुन्दर एवं सुसंस्कृत बनाने के लिये, हमारे पूर्वज मनीषियो ने जो नियम बनाये हैं, उन्हे हम संस्कार कहते हैं। इन्ही संस्कारो के द्वारा, ऋषियो ने, जीवन के प्रत्येक पहलू को, गुणो से भरने एवं विकसित करने का, सतप्रयास किया था। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारो की उपादेयता का, हमारे विविध धर्मग्रन्थो में यथाविधि वर्णन है। ग्रहस्थ सूत्रो के अनुसार, इन संस्कारो की संख्या 16 है। जिन्हे हम 5 भागो में विभक्त कर सकते है।

क– प्राग् जन्म संस्कार 1.गर्भाधान 2. पुंसवन 3. सीमान्तोययन

ख– बाल्यकालीन संस्कार 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्कमण 7. अन्नप्राशन 8. चूड़ाकर्म 9. कर्णवेध

ग– शिक्षाकालीन संस्कार 10. उपनयन 11. वेदारम्भ 12. समावर्तन

घ– आश्रम सम्बन्धी संस्कार 13. विवाह 14. वानप्रस्थ 15. संन्यास

ड– जीवनोपरान्त संस्कार 16. अन्तयेष्टि

पुरूषार्थ चतुष्टय

भारतीय मनीषियो ने, मनुष्य के लौकिक तथा पारलौकिक विकास को ध्यान में रखते हुए पुरूषार्थ चतुष्टय के द्वारा, जीवन की समग्रता का विवेचन किया है। पुरूष का अर्थ है– पुरे शरीरे शयनात् पुरूषः अर्थात् जीवात्मा पुरूष अर्थात् जीवात्मा के जीवन की सफलता धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार बातो में निहित है इसलिये इन्हें, पुरूषार्थ चतुष्टय कहा गया है।

धर्म– प्रथम पुरूषार्थ है, धार्यते अनेन इति धर्मः यह प्रजा को धारण करता है, इसलिये धर्म कहलाता है। कणाद मुनि ने कहा है–

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः अर्थात् जिससे कल्याण एवं उन्नति हो वह धर्म है। अभ्युदय का अर्थ है भौतिक प्रगति अर्थात् इहलौकिक प्रगति निःश्रेयस का अर्थ है, पारलौकिक कल्याण।

जिन कार्यो से, सामाजिक समरसता बनी रहे, उन्हे ही धर्म मनुष्य को सदाचरण की ओर प्रेरित करता है क्योंकि व्यक्ति एवं समाज का हित करने वाले कर्त्तव्य ही धर्म हैं। इस प्रकार प्रथम पुरूषार्थ धर्म ही, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का मूलकारण है। तथा शेष तीन अर्थ, काम और मोक्ष धर्म पर ही आश्रित है।

अर्थ– जो धन सम्पत्ति तथा धन धान्य, धर्मपूर्वक अर्जित किया जाता है, वही अर्थ की श्रेणी में आता है। राष्ट्र तथा समाज के निर्माण व उन्नति के लिये, अर्थ की महती आवश्यकता है। परन्तु अधर्म से अर्जित किया गया अर्थ, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का विनाश कर सकता है, अतः अर्थ की प्राप्ति सात्विक धर्म से युक्त होनी चाहिए।

काम– धर्म युक्त काम ही शास्त्रोवत्त है। वासना के कुत्सित भाव से युक्त काम की शास्त्रो में निन्दा की गई है।

मोदन– अर्थ और काम मनुष्य को संसार में प्रवृत्त करते हैं, वही मोदन के द्वारा वह संसार से निवृत्त हो जाता है। परन्तु ये तभी सम्भव है जब धर्म का सार समझ कर मनुष्य पुरूषार्थ चतुष्टय

को, धर्मानुकूल निभाता है, तभी जीवन के त्रिविध दुःखो से, अनिवार्य रूप से सार्वकालिक निवृत्ति पाकर मोक्ष को प्राप्त होता है।

संस्कृत साहित्य का इतिहास

इसमें महाकाव्य, नाटक एवं गीतिकाव्य का सामान्य परिचय है

महाकाव्य– संस्कृत काव्य साहित्य के दो भेद होते है 1. हश्यकाव्य 2. श्रव्य काव्य।

हश्यकाव्य के अन्तर्गत नाटक आते है परन्तु श्रव्यकाव्य के तीन भेद होते हैं 1. पद्य काव्य 2. गद्य काव्य 3. चम्पू काव्य जिसमें गद्य एवं पद्य दोनो का प्रयोग होता है।

संस्कृत काव्य की झलक सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होती है परन्तु वस्तुत संस्कृत का आदि महाकाव्य महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण ही है। यही उस काव्यधारा का उद्गम है जो कालिदास, अश्वघोष, भारवि, माघ आदि विभिन्न स्रोतो में, विभक्त होकर संस्कृत काव्य कानन को, चिरकाल से सीचती चली आई।

संस्कृत महाकाव्यो के रचयिताओ में महाकवि कालिदास का नाम अग्रगण्य है। महाकवि कालिदास ने कुमार सम्भव और रघुवश दो महाकाव्यो की रचना की कुमार सम्भव में 17 सर्ग है इनमें शिव पार्वती के विवाह, कार्तिकेय के जन्म, तथा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है। रघुवंश में 19 सर्ग है यह संस्कृत साहित्य का उत्कृष्ट महाकाव्य है जिसमें सूर्यवंश के राजाओ का यशोगान किया गया है।

संस्कृत के बौद्ध कवियो में अश्वघोष का सम्माननीय स्थान है। सौन्दरनन्द तथा बुद्धचरितम् इनके दो महाकाव्य है, जिनमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्तो का आकर्षक रूप से प्रतिपादन किया गया है।

महाकवि भारवि की कीर्ति, उनके सुप्रसिद्ध महाकाव्य किरातार्जुनयिम् पर, अवलम्बित है। इस महाकाव्य ने, अपने प्रशस्त गुणो के कारण संस्कृत साहित्य में, विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। इसमें 18 सर्ग है।

भट्टि रचित भट्टिकाव्य में 22 सर्ग है। इसमें विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण की जाने की घटना से लेकर रामायण की कथा वर्णित है।

सुप्रसिद्ध महाकाव्य शिशुपालवध के रचयिता माघ है शिशुपाल वध में 20 सर्ग है।

श्री हर्ष संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध महाकाव्य नैषधीय चरित्र के रचयिता है। नैषध में 22 सर्ग है। इसमें नल दमयन्ती के प्रेम और विवाह की कथा, बड़ी सरस शैली में वर्णित है। संस्कृत महाकाव्यो की बृहत्त्रयी में किरातार्जुनीय् शिशुपालवध तथा नैषधीय चरितम् की गणना की जाती है।

नाटक

संस्कृत के नाटककारो में सर्वप्रथम नाम माघ का आता है। ये कालिदास के पूर्ववर्ती प्राचीन नाटककार थे। इनके 13 नाटक उपलब्ध है। 1. प्रतिज्ञा यौगन्धरायण 4 अंक 2. स्वप्नवासवदत्तम् 6

अंक 3. उरूमङग 4. दूतवाक्यम् 5. पंचरात्रम् 6. बालचरितम् 7. दूतघटोत्कच 8. कर्णभार 9. मध्यम व्यायोग 10. प्रतिमा नाटकम् 11. अभिषेक नाटकम् 12 अविमारक 13. चारूदन्तम्

महाकवि कालिदास, संस्कृत साहित्य के सर्वोत्कृष्ट, नाटककार माने जाते है। इनके तीन नाटक है—1. मालविकाग्निमित्रं 2. विकमोर्वशीयं 3. अभिज्ञान शाकुन्तलम्। अभिज्ञान शाकुन्तल्यम् समग्र संस्कृत साहित्य का, सर्वोकृष्ट नाटक माना जाता है। दृश्य काव्य में शाकुन्तलम् का विशिष्ट स्थान है। समालोचक कहते है।

काव्येषु नाटकाम् रम्यम् तन्त्र रम्या शकुंतला।

भारत के प्राचीन विद्या व्यसनी राजाओ में, सम्राट हर्षवर्धन का नाम प्रसिद्ध है, इन्होने 3 नाटको की रचना की है 1. प्रियदर्शिका 2. रत्नावली 3. नागानन्द

संस्कृत के महान् नाटककारो में, भवभूति का नाम कालिदास के बाद ही लिया जाता है। इनके 3 नाटक उपलब्ध है।

1.महाबीर चरितम् 2. मालतीमाधवम् 3. उत्तररामचरितम्।

विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नाटक भट्टनारायण ने वेणीसंहार नाटक मुरारि ने अनर्धराघव नाटक शक्तिमद्र ने आश्चर्यचूड़ामणि नाटक, दामोदर मिश्र ने हनुमन्त्राटक शूद्रक ने मृच्छकटिकम् नाटक से संस्कृत नाट्य साहित्य को गरिमा प्रदान की।

गीतिकाव्य

साहित्यदर्पण के अनुसार खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशानुसारिच जिन काव्यो में मानवजीवन के एक ही पक्ष का उद्घाटन या अन्तरात्मा के किसी एक ही पटल का, चित्रण हो, वह गीतिकाव्य है। जहां महाकाव्य में मानवजीवन की समग्रता का प्रसार है, वहां गीति काव्य में जीवन की एकदेशीयता की तन्मयता है। प्रधानतया गीतिकाव्य में श्रृंगारिक, धार्मिक, अथवा नैतिक एक ही विषय, वर्णित रहता है।

गीतिकाव्य के अन्तर्गत महाकवि की दो रचनायेंहै 1. ऋतुसंहार में षड्ऋतुओ का यथाकम वर्णन है। मेघदूत के दो भाग है क. पूर्वमेघ ख. उत्तर मेघ। पूर्वमेघ में अलकापुरी के अधीश्वर कुबेर द्वारा एक वर्ष के लिये निर्वासित विरही यक्ष की, मनोव्यथा का, आर्थिक चित्रण किया गया है। तथा उत्तर मेघ में विरहिणी यक्षिणी का।

गीतिकाव्य के अन्तर्गत घटकर्पर हाल गाथासप्तराती मत्हरि के नीतिशतक, श्रृंगार शतक तथा वैराग्यशतक तथा अमरूथा अमरूकशतक बिल्हण रचित चौरपंचाशिका धोवीकृत पवनदूत आदि आते है।

इसके साथ ही कवि जयदेव रचित गीतगोविन्द भी गीतिकाव्य का अनूठा रत्न है। जयदेव के पश्चात् गीतिकाव्य साहित्य में, उल्लेखनीय नाम, पण्डितराज जगन्नाथ जी का है जिनके रचितग्रन्थ 1. गंगालहरी जिससे गंगा की स्तुति है। 2. सुधालहरी जिसमे सूर्य की स्तुति है। 3. अमृतलहरी 4. करूणालहरी 5. लक्ष्मीलहरी रसगंगाधर भामिनीविलास पंडितराज के मुक्तक गीतात्मक पद्यो का सुन्दर संग्रह है।